गोलालारीय समाज का मुखपत्र

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com
9406744064

मासिक
गोलालारीय दर्शन
सफलता के 10 वर्ष
लेट पोस्टिंग
अपनों के साथ अपनी बातें

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2018-2020

सेवा में,

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 10 अंक : 6 पृष्ठ संख्या : 8 माह – 15 अप्रैल 2019 सहयोग राशी 1100/– देकर सदस्य बनें।

जैन समाज की घटती जनसंख्या, समाज के लिए विचारणीय ?

हाल ही में संपन्न हुए कार्यक्रम में इन्दौर समाज के विशिष्ट जनों ने एक महत्वपूर्ण विषय की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया जो कि विगत दशकों में समाज की घटती जन्म दर से संबंधित है। पिछले तीन दशकों के जनसंख्या संबंधी आंकड़ों से यह तथ्य सामने आया है कि मध्यप्रदेश में जैन समाज की जनसंख्या वृद्धि दर अन्य समुदायों की तुलना में सबसे कम है (तालिका 1 देखें)

इसके परिणाम स्वरुप पहले से ही अल्पसंख्यक घोषित जैन समाज की जनसंख्या में और तेजी से कमी आने की संभावना है। पूर्व में इसी संदर्भ में मई 2017 में इन्दौर स्थित कुंद कुंद ज्ञानपीठ में आयोजित क्षु. जिनेन्द्र वर्णी व्याख्यान माला के अंतर्गत भारत सरकार के जनसंख्या निदेशालय में उपनिदेशक का दायित्व निभा रहे श्री धीरजजी जैन ने अपने विस्तृत व्याख्यान में मध्यप्रदेश और विशेषकर इन्दौर की जनसंख्या के संबंध में आंकड़ों द्वारा विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला था। उन्होंने भी आशंका जताई कि यदि जनसंख्या दर में इसी तरह गिरावट जारी रही तो आगामी वर्षों में पारसी समुदाय के समान हमारी जनगणना भी रोकी जा सकती है।

जनसंख्या दर में यह कमी अचानक नहीं आयी है। पिछले कुछ ही वर्षों में यह अंतर काफी अधिक बढ़ गया है। हमारे आसपास ही देखें तो जहां पिछली पीढ़ी में पांच छह बच्चे होना सामान्य होता था। हमारी पीढ़ी में एकदम से संख्या घटी और परिवार में 'हम दो, हमारे दो' बच्चों का नारा प्रसिद्ध हुआ, फलस्वरुप तीन बच्चे भी कम ही परिवारों में मिलते हैं। आज की प्रगतिशील युवा पीढ़ी में यह आंकड़ा एक बच्चे तक आ गया है। कहीं कहीं तो परिवार के नाम पर बस पति और पत्नी ही हैं जो एक भी बच्चा नहीं चाहते।

यह स्थिति क्यों आई, इसके अनेक कारण हैं जिनमें आर्थिक कारण अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज के मंहगाई के समय में बच्चों की अच्छी परवरिश वास्तव में एक कठिन कार्य हो गया है। बच्चे के जन्म से लेकर उसका लालन पालन, शिक्षा करियर, जॉब इत्यादि बहुत अधिक खर्चीला हो गया है। शिक्षित युवा वर्ग की प्रगतिशील सोच भी छोटे परिवार को प्राथमिकता देती है। युवाओं की करियर और जॉब में बढ़ती महत्वाकांक्षाएं भी एक कारण है जिसके कारण वे परिवार की जिम्मेदारी नहीं उठाना चाहते।

एकल परिवार में पति पत्नी दोनों के नौकरीपेशा होने से बच्चों की जिम्मेदारी उठाना उन्हें कठिन लगता है। समाज की बेटियों का अंतर्जातीय विवाह और युवक युवतियों का बाल ब्रह्मचर्य व्रत लेकर, दीक्षा लेकर संत बनना भी कुछ हद तक समाज की घटती जनसंख्या के लिए उत्तरदायी है।

बदलता सामाजिक परिवेश, बच्चों की सुरक्षा, पढ़ाई के पश्चात रोजगार, विवाह में आने वाली समस्याएँ आदि अनेक ऐसे कारण है जिससे आज का युवा वर्ग बच्चों की जिम्मेदारियां नहीं उठाना चाहता है।

किन्तु समाज की घटती संख्या पर चिंता भी जायज़ है। अन्य समुदायों की तुलना में जैनों 0–19 आयु वर्ग की संख्या सबसे कम है और 60+ आयु वर्ग की संख्या सबसे अधिक है। विशेषज्ञों के अनुसार पिछले दो दशकों में जनसंख्या में आई गिरावट का परिणाम अब इस रुप में दिखाई दे रहा है कि एक से बीस वर्ष आयु के बच्चे और युवा घट रहे हैं। समाज में बुजुर्गों की संख्या अधिक हो रही है, परिणामस्वरुप जापान के समान जैन समाज कुछ वर्षों बाद बुजुर्गों का समाज बनकर रह जाएगा। (तालिका 2 देखें)

जैन समाज की जन्म दर दूसरे समाजों की तुलना में काफी कम तो है ही, वहीं 0–19 वर्ष आयु समूह की वृद्धि दर नकारात्मक रुप से घट रही है (तालिका 3 देखें)। इसका एक कारण शिक्षित युवाओं का विदेशों की ओर पलायन भी है, जो कि दोहरा आघात है। बच्चों और युवा शक्ति की कमी अर्थात क्रियाशील वर्ग की कमी, काम करने वाले हाथों की कमी, आर्थिक रूप से समर्थ समूह की कमी, आदि आदि। भविष्य में इसका भयावह परिणाम यह होगा कि समाज के बढ़ते अशक्त बुजुर्ग समुदाय की जिम्मेदारियां, उनकी सेवा टहल करने वाला कौन होगा। समाज में वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ जाएगी। मंदिरों में पूजा अभिषेक करने वाले कहां से आयेंगे। मुनि आर्यिकाओं की चर्या कौन पूर्ण कराएगा, उनके आहार, निहार और विहार संबंधी क्रियाएं कैसे संपन्न हो पायेंगी। युवाओं के द्वारा संपन्न किये जाने वाले अनेक ऐसे कार्य, उत्तरदायित्व संभालने की अनेकानेक समस्याएं उत्पन्न होने की आशंकाऐं जताई जा रही हैं जो निश्चय की विचारणीय है। (तालिका 3)

इन्हीं आंशकाओं के मद्देनजर इन्दौर समाज की महासभा में समाज के विशिष्ट जनों ने 'हम दो, हमारे तीन' नारा दिया है जो कुछ हद तक प्रासंगिक है। किन्तु समाज के प्रगतिशील युवा इस को कितना समर्थन देंगे या इस ओर कितना आगे बढ़ेंगे यह आगामी समय में ही पता चल सकेगा। क्योंकि सामाजिक हित में यह स्वीकार्य हो सकता है, किन्तु देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को और बढ़ाने का यह कदम सभी के गले नहीं उतरेगा। यह भी कटु सत्य है कि देश की जनसंख्या को कम करने का प्रयास सभी वर्गों को समान रूप से करना चाहिए जो कि नहीं हो रहा है। जनसंख्या नियंत्रण का दायित्व जितना जैन समाज ने पूर्ण किया है उतना अन्य समुदायों ने नहीं (तालिका 3 देखें)। जैन समाज देश की शिक्षित, समर्थ और साधन संपन्न समाज है। अल्पसंख्यक होने के बावजूद हम आत्मनिर्भर हैं। देश के समग्र विकास में जैन समाज अपनी महती भूमिका निभाने में सक्षम है। इस नाते हमें अपनी जनसंख्या बढ़ाने के अन्य विकल्प भी सोचना चाहिए।

समाज के आर्थिक रूप से सक्षम परिवारों में युवाओं को कम से कम दो या तीन बच्चों को जन्म देने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। आर्थिक रुप से कमजोर परिवारों के बच्चों के पालन पोषण और शिक्षा, रोजगार और विवाह आदि के लिए समाज की ओर से आर्थिक सहायता के लिए स्थायी कोष बनाया जाए।

अपना परिवार बढ़ाने के साथ साथ हम अनाथ बच्चों को गोद लेकर भी यह कार्य कर सकते हैं। नई संतान को जन्म देने के बजाए एक जन्मे हुए बच्चे को अपना नाम, अपना धर्म देना भी उतना ही पुण्य कार्य होगा।

जैन अनाथाश्रमों को निर्माण और विकास किया जाए जिसमें पलने बढ़ने वाले बच्चों को कानूनन जैन संस्कार और नाम दिया जा सके। (इसकी कानूनी समीक्षा जरुरी है)। प्रतिदिन शहर में लावारिस शिशु सड़कों पर, झाड़ियों में मिल रहे हैं। एक संस्था के रूप में हम उन्हें सहारा देकर मानवता का भला कर सकते हैं। यदि हम अपना दिल बड़ा कर सकें तो यह एक उत्तम समाधान हो सकता है। हमारे धर्म का मूल सिद्धांत भी यही कहता है कि मनुष्य केवल जन्म से नहीं कर्म से जैन बनता है। तो आइए हम सब मिल कर ऐसे ही कुछ कारगर प्रयास करें।

– अनुपमा जैन, सह संपादिका

तालिका – 1

आयु वर्ग	पुरुष 2011	पुरुष 2001	पुरुष अंतर	पुरुष प्रतिशत	महिला 2011	महिला 2001	महिला अंतर	महिला प्रतिशत
0-4	2087	2331	-244	-10.5	1868	2104	-236	-11.2
5-9	2286	2597	-311	-12.0	2060	2344	-284	-12.1
10-14	2726	2942	-216	-7.3	2369	2596	-227	-8.7
15-19	2943	2952	-9	-0.3	2514	2555	-14	-0.5
टोटल	10042	10822	-780	-7.2	8838	9599	-761	-7.9

तालिका – 2

अनुपात (प्रतिशत)	आयु-समूह (वर्षों में) 0-19	20-59	60+
हिन्दू			
कुल	37.6	54.2	8.2
पुरुष	38.4	53.9	7.7
महिला	36.8	54.4	8.8
मुस्लिम			
कुल	43.5	49.4	7.1
पुरुष	43.9	49.2	6.9
महिला	43.1	49.5	7.4
जैन			
कुल	26.3	60.7	13.0
पुरुष	27.5	59.5	13.0
महिला	25.1	62.0	12.9

तालिका – 3

आयु वर्ग	दशकीय वृद्धि दर (2001-2011) प्रतिशत में हिन्दू	मुस्लिम	जैन
सभी आयु	32.0	44.6	13.7
0-4	13.5	34.4	-10.8
5-9	80.1	23.3	-12.0
10-14	14.5	23.2	-8.0
15-19	29.1	40.4	-0.4
20-24	32.9	52.6	0.30

इन्दौर समाज में निर्माणाधीन मंदिरजी में मुक्त हस्त से सहयोग करें –

कोमलचंद जैन, इन्दौर। इन्दौर गोलालारीय समाज द्वारा गतवर्ष 29.04.18 को नवीन मंदिरजी निर्माण हेतु एम.आर. 10 के नजदीक ग्राम कुम्हेड़ी में भूमि शुद्धि का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। जिसमें ब्र. अनिल भैयाजी और ब्र. अभय भैया 'आदित्य' के निर्देशन में समाजजनों की उपस्थिति में मांगलिक क्रियायें संपन्न करायी गयी थी। इस अवसर पर समाज जनों ने अपनी यथाशक्ति अनुसार बोलियां लेकर मंदिरजी निर्माण में आर्थिक सहयोग दिया। भूमि शुद्धि के पश्चात निर्माण कार्य निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है। मंदिरजी में अभी वेदीजी का निर्माण, शिखर निर्माण, फर्श पर संगमरमर व अन्य छोटे बड़े कई कार्य होना शेष है जिसे आप आर्थिक सहयोग प्रदान कर पूर्ण करा सकते है। आप चाहे तो अपने परिवार की ओर से एक मुश्त राशि प्रदान कर इस कार्य को संपन्न करा सकते है। दानराशि को आप किश्तों में भी जमा करा सकते है। आप चाहे तो लोहा, सीमेंट, रेती, गिट्टी, दरवाजों के लिए लकड़ियां, फर्श के लिए मार्बल व मंदिरजी के स्तंभों के लिए पत्थरों के रुप में भी दान कर सकते है। समाज द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि 21000/– से अधिक की राशि दान करने वाले सदस्यों नाम शिलालेख पर अंकित जावेगा। मंदिर परिसर से कुछ ही दूरी पर 27000 वर्गफीट की एक भूमि समाज द्वारा कुछ वर्ष पूर्व मांगलिक भवन व होस्टल इत्यादि उपयोग के लिये खरीदी गई थी। इस भूमि को खरीदने में इन्दौर गोलालारीय समाज के अनेको परिवारों ने बढ़ चढ़कर आर्थिक सहयोग प्रदान किया था। समाज के स्थायी न्यासी श्री रमेशचन्द्रजी के सहयोग से इस महत्वपूर्ण कार्य को मूर्तरूप दिया जा सका है। भविष्य में विवाह समारोह को आयोजित करने के लिए इस परिसर को विकसित कर समाज सदस्यों को न्यूनतम शुल्क पर किराये पर देने के साथ इस भूमि पर समाज हित को ध्यान रख बहुपयोगी कार्य के लिए शीघ्र ही विकसित किये जाने की योजना है। जिसमें आपका सहयोग अति आवश्यक है।

पूजन करते समय चावल का एक कण भी नीचे नहीं गिरना चाहिए

- आचार्यश्री विद्यासागर महाराज

अष्ट द्रव्य - जैन पूजन के लिए

आचार्यश्री विद्या सागर जी महाराज ने भाग्योदय परिसर में धर्मसभा के दौरान समझाया कि पूजा कैसे की जाती है जिस समय जो अर्घ चढ़ाना चाहिए वह चढ़ाएँ , इससे कर्मों की निर्जरा होती है पूजन करते समय हमेशा सावधानी बरतना चाहिए और चावल का एक कण भी नीचे नहीं गिरना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा भक्ति और पूजन मन लगाकर करना चाहिए। पूजन करना आपको अच्छे तरीके से सीखना पड़ेगा। अर्घ चढ़ाते है और बिखराते है गली-गली, ऐसा नहीं होना चाहिए। समय का अपव्यय नहीं करना चाहिए बल्कि समय का उपयोग अच्छे कामों में करना चाहिए। मेंढ़क की कहानी सुनाते हुए आचार्यश्री ने कहा कि एक कुएँ में एक मेंढ़क रहता था। उसने ऊपर दो व्यक्तियों की आवाज सुनी कि आज यहां पर भगवान आ रहे हैं उसका भी मन हुआ दर्शन करने का और वह कुएँ से बाहर आकर जिस तरफ लोग जा रहे थे वह उसी तरफ बढ़ता गया लेकिन छोटा होने से कोई वाहन उसके ऊपर से निकल गया और उस मेंढ़क की यात्रा समाप्त हो गई। आप लोगों को भी हमेशा नीचे देखकर चलना चाहिए। संकलन - सीमा जैन, ललितपुर

अभिनंदन का अभिनंदन...

बहुत बहुत तुमको अभिनंदन।
तुम हो भारत माँ के नंदन।
जो तुमने करके दिखलाया।
घर में घुसकर मार गिराया।।
बहुत बहादुर तुम हो अभिनंदन।
पूरा देश कर रहा तुमको वंदन।
हर देशवासी की दुआ हुई कबूल
तभी तो वापिस आ गया अभिनंदन।।
एक योद्धा ने सिखला दिया, तुमको सबक।
अब आगे मत करना, कभी कोई भूल।
कितने अभिनंदन और, बैठे है भारत में।
कौन सा योद्धा कर देगा, तुम्हारा खेल खत्म।।
अब तुमको मालूम पड़ा है, किससे तू उलझ रहा है।
अब भी अगर न सम्भले तुम ? तो बहुत पछताओगे।
और अपनी बर्बादी का, जश्न तुम ही मनाओगे।
क्योंकि भारत के पास है, देशभक्त अभिनंदन।।
इस बार भी तू फिर हार गया,
अपनी कायरता को दिखा गया।
कितने भेड़ियों को तुम पालोगे,
हम उनको घुटनों के बल ला देंगे।
क्योंकि भारत में है, देशभक्त अभिनंदन।
जिसका पूरा देश आज, कर रहा अभिनंदन।।
अभिनंदन, अभिनंदन, अभिनंदन, अभिनंदन।।

यह कविता देश के वीर जाबांज विंग कमांडर अभिनंदन को समर्पित है। - संजय जैन, मुंबई

आचार्यश्री पहले ऐसे संत, जिनके जीवन पर अब तक 55 पीएचडी

22 साल की उम्र में संन्यास लेकर दुनिया को सत्य-अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की एक झलक पाने सैकड़ों लोग मीलों पैदल दौड़ पड़ते है। उनके प्रवचनों में धार्मिक व्याख्यान कम और ऐसे सूत्र ज्यादा होते हैं जो किसी भी व्यक्ति के जीवन को सफल बना सकते है। वे अकेले ऐसे संत हैं जिनके जीवित रहते हुए उन पर अब तक 55 पीएचडी हो चुकी है। ये है उनका जीवन वृत्त - हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला, कन्नड़, मराठी आदि भाषाओं के जानकार विद्यासागरजी का बचपन भी आम बच्चों की तरह बीता। गिल्ली-डंडा, शतरंज आदि खेलना, चित्रकारी आदि का इन्हें भी बहुत शौक रहा। लेकिन जैसे-जैसे बड़े हुए आचार्यश्री का अध्यात्म की ओर रूझान बढ़ता गया। आचार्यश्री का बाल्यकाल का नाम विद्याधर था। कर्नाटक, बेलगांव के ग्राम सदलगा में 10 अक्टूबर 1946 को जन्मे आचार्यश्री ने कन्नड़ के माध्यम से हाईस्कूल तक शिक्षा ग्रहण की। इसके बाद वे वैराग्य की दिशा में आगे बढ़ें और 30 जून 1968 को मुनि दीक्षा ली। आचार्य का पद उन्हें 22 नवम्बर 1972 को मिला। शोध के लिए छात्र पढ़ते हैं मूक माटी। जैन दर्शन पर कई पुस्तकें लिखने के साथ ही वे कविता लेखन भी करते रहे। उन्होंने माटी को अपने महाकाव्य का विषय बनाया और मूक माटी नाम से एक खंडकाव्य की रचना की। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित उनकी यह पुस्तक बहुत लोकप्रिय हुई। विचारकों ने इसे एक दार्शनिक संत की आत्मा का संगीत कहा। इससे कई छात्र अपने शोध के लिए बतौर संदर्भ इसे उपयोग में ला रहे है। उनकी अन्य रचनाएँ नर्मदा का नरम कांकर, डूबो मत, लगाओ डुबकी आदि है। संकलन - मंजू जैन, भोपाल

अमेरिका के कैलीफोर्निया में बनेगा भव्य जिनालय

भारत देश में जैन धर्म की ध्वजा फहराने वाले आचार्य गुरुवर विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि पुंगव सुधासागरजी महाराज जिन्होंने राजस्थान के रेगिस्तान की धरती के सूखे पड़े क्षेत्रों को फिर से हरा भरा करने का बीड़ा उठाकर सारे मंदिरों के महिमा को बता कर उस क्षेत्र का जीर्णोद्धार कराया। एक ऐसे महान संत जिनकी करुणा की जग में मिसाल है एक ऐसा उदाहरण हमारे सामने आया कि महाराज राष्ट्रीय स्तर पर पूरे भारत के क्षेत्रों पर नज़र है और गुरुजी की दृष्टि जिस क्षेत्र पर पड़ी है उसका इतिहास बना है। फरवरी में पूज्य मुनि पुंगव के पास कैलीफोर्निया (अमेरिका) का प्रतिनिधि मंडल सुदर्शनोदय तीर्थ क्षेत्र आंवा आया। जहाँ उन्होंने मूलनायक भगवान शांतिनाथ की शांतिधारा की और गुरुजी के दर्शन किये और गुरुजी से थोड़ा समय लेकर चर्चा की। उस चर्चा का विषय था कि कैलीफोर्निया (अमेरिका) में वहां की जैन समाज ने 68 एकड़ जमीन ली है जहाँ उनकी भावना है कि यहां एक ऐसा क्षेत्र पूज्य मुनि पुंगव के आशीर्वाद से बने जो कि वहां की समाज के भविष्य को संवार सके। उसके लिए उनको जगतपूज्य की प्रेरणा, मार्गदर्शन और आशीर्वाद चाहिए, और होना क्या था हमारे गुरुजी करुणा की जग में मिसाल हैं उन्होंने तुरंत प्रभाव से उन्हें आश्वस्त किया कि यहां से एक टीम आपके वहां आयेगी और जमीनी तौर पर सारी जानकारियां लेकर, सारी चीजें देखकर वापस आकर सारा ज्ञात करवाएँगे। उसके बाद का प्रारुप तैयार करवाया जायेगा। जो सदस्य कैलीफोर्निया की जाकर वहां वस्तु स्थिति की जानकारी लेगें उनके नाम -

वास्तुविज्ञ प्रतिष्ठाचार्य बा. ब्र. प्रदीप भैयाजी, वास्तुकार एवं आर्किटेक्ट श्रीपाल भाई नोगामा, आर्किटेक्ट मीतुल भाई सोमपुरा व एस.एम. सोमपुरा।

वहां से वापस लौटकर गुरुजी के सम्मुख सारी जानकारी रखेंगे। उसी आधार पर गुरुजी निर्णय करेंगे। और जहां तक हम गुरुजी को जानते हैं मैं वहीं कहूंगा कि अब कैलीफोर्निया (अमेरिका) वालों के भाग्य खुल गए क्योंकि उन पर कृपा दृष्टि ऐसे संत की पड़ी है जिनके मात्र स्मरण से सारे काम हो जाते है, उनका कार्य सफल होता ही है।

हम सभी की यही भावना है कि वहां एक ऐसा क्षेत्र गुरुजी के मार्गदर्शन में बने जिसकी ख्यात पूरे विश्व में फैलें।

संकलन - आमोद जैन, कानपुर

अपना दायित्व निभायें -

गोलालारीय दर्शन पत्रिका 10 वर्षों से आपको नियमित उपलब्ध करानें में हम हरसंभव प्रयास करते हैं। हम मानते हैं कुछ परिवारों को पत्रिकायें समय पर प्राप्त नहीं हो पाती है। इसमें आपके संपूर्ण पते के समय शहर के पिनकोड का नहीं होना एक बड़ा कारण हो सकता है। आप अपना पूर्ण पता मय पिनकोड सहित समाज के वाट्सएप्प नंबर 94067-44064 पर भेज सकते है। इसके अतिरिक्त हमारी सबसे पीड़ा सिर्फ एक है कि पिछले कई वर्षों में आपके परिवार के मांगलिक प्रसंगों के अवसर पर हमारे आग्रह पर, आपकी सहमति पश्चात जो विवाह विज्ञापन प्रकाशित किये गये है उनमें से कुछ परिवारों द्वारा अभी तक अपनी सहयोग राशि जमा नहीं कराई गयी है। हम राशि मांगकर आपकी प्रतिष्ठा को ठेस नहीं पहुंचाना चाहते है। हमारा ऐसा मानना है कि हर व्यक्ति को यह मालूम होता है कि उसे किसका बकाया चुकाना है। अत: आप अपने अंतर्मन की आवाज को नजरअंदाज न करते हुए अपने समाज की एकमात्र पत्रिका 'गोलालारीय दर्शन' के भविष्य पर गंभीरतापूर्वक विचार कर शीघ्र ही भुगतान की व्यवस्था करें।
हमारा उन परिवारों से पुन: करबद्ध निवेदन हैं कि जिन्होंने अभी तक अपनी सहयोग राशि हमारे बैंक खाते में जमा नहीं कराई है। हमारे बैंक खाता का संपूर्ण विवरण पत्रिका में ही अंकित है। अधिक जानकारी के लिए आप संपर्क करे - 9424013136।

हार्दिक बधाई

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय मंडल 3040 के वर्ष 2019-20 हेतु रोटरी क्लब सीहोर के पूर्व अध्यक्ष एवं शासकीय महिला पॉलीटेकनिक कॉलेज सीहोर में विभागाध्यक्ष के पद पर पदस्थ **डॉ. पंकज जैन** को असिस्टेंट गर्वनर मनोनीत किया गया। साथ ही रोटरी क्लब सीहोर, सोनकच्छ, हाटपिपलिया, भौंरासा एवं बरेठा का प्रभार दिया है। रोटेरियन डॉ. पंकज जैन एक प्राध्यापक के साथ ही समाज सेवी एवं प्रबंधन की कई पुस्तकों के लेखक भी है। आपको 2 बार राष्ट्रीय स्तर के पाठ्यपुस्तक लेखक पुरस्कार से अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। भारतीय निर्वाचन आयोग द्वारा आपको राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर भी नियुक्त कर सम्मानित किया जा चुका है। आप स्थानीय जन समाज सीहोर के संगठन मंत्री एवं अनेक सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

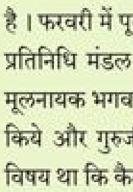

स्टेच्यू ऑफ प्यूरीटी परियोजना के महत्वपूर्ण कार्य के लिए **श्री प्रवीण कुमार जैन 'विश्व परिवार'** बुंदेलखंड क्षेत्र में मुख्य संयोजक के रुप में मनोनीत किया गया।

नेशनल मीडिया फाउंडेशन दिल्ली द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर भोपाल की **साधना जैन** को गरिमामय कार्यक्रम में सम्मान किया गया। साधना जैन भोपाल आकाशवाणी से जुड़ी है। साथ ही समाज की अनेक संस्थाओं से जुड़कर मानव सेवा कार्य को पूर्ण मनोयोग से निष्पादित कर रही है।

अ.भा. श्वेताम्बर जैन महिला संघ द्वारा आयोजित ''मेरी बेटी, मेरी शान'', ''मेरी माँ मेरा अभिमान'' प्रतियोगिता के ग्रैंड फिनाले में **श्रीमती निधि नितिन जैन** एवं उनकी बेटी **नित्यता जैन** ने दूसरा पुरस्कार प्राप्त किया। पुरस्कार स्वरुप 21000/- की नगद राशि एवं कई गिफ्ट हैंपर प्राप्त हुई। इस प्रतियोगिता में कई राउंड्स थे जिसमें प्रमुख रुप से फैशन शो, स्किट, क्विज, नृत्य, पिता के नाम पत्र आदि राउंड्स आयोजित किये गये थे। जिसमें प्रतियोगी की पुरानी उपलब्धियों के लिए कोई पांईट्स नहीं थे। नित्यता जैन एक इंटरनेशनल चैस प्लेयर होने के साथ साथ नृत्य में भी रुचि रखती है, इसके अलावा पढ़ाई में भी टॉप पोजीशन लाने के साथ साथ एक कुशल वक्ता भी है।

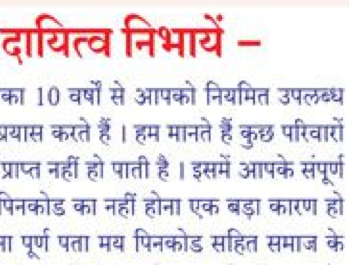

आपके परिवार में किसी भी सदस्य ने सामाजिक, धार्मिक, खेलकूद व अन्य क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो तो हमें प्रकाशन हेतु भेज सकते है।

समाज की महिलाओं व युवा पीढ़ी से अनुरोध है कि वे अपनी कवितायें, कहानी, लेख हमें अपने चित्र सहित प्रकाशन हेतु भेज सकते है। योग्य रचना को आगामी अंक में प्रकाशित किया जावेगा।

योग्य वर वधू की तलाश – आज के परिवेश में

वर्तमान में यह विषय बड़ा ही सामयिक हो गया है । कुछ वर्षों पहले माता पिता के लिए बेटी का विवाह एक समस्या होता था किन्तु बेटे को लेकर निश्चिंतता रहती थी परंतु आज समय बदल गया है । जितना कठिन बेटी के लिए अच्छा दामाद ढूंढना है, उतना ही या कहे कि उससे भी कठिन बेटे के लिए उपयुक्त बहू लाना है । सारे प्रयासों के पश्चात यदि विवाह संपन्न हो भी जाए तो उसके जीवनपर्यंत निर्वहन का भी कोई ग्यारंटी नहीं है । इसे ऐसे भी कहें कि जितनी तेजी से विवाह होते है उससे भी कहीं अधिक शीघ्रता से विवाह विच्छेद हो रहे हैं । इस प्रकार आजकल विवाह सामाजिक संस्कार न होकर सामाजिक समस्या के रुप में अधिक सामने आ रहे हैं । विषय की तह में जाने पर कुछ अनचाहे सत्य सामने आते हैं । पहले बिवाह एकतरफा निर्णय होता था जिसमें प्राय: लड़की की सहमति का कोई महत्व नहीं होता था । माता पिता को अपने मापदंडों के अनुसार जो उचित घर, वर पसंद आया, बेटी का ब्याह कर अपने कर्त्तव्य का इतिश्री समझ लेते थे । आगे बेटी की किस्मत । सब कुछ अच्छा रहा तो ठीक अन्यथा जीवन भर परिवार और परिस्थिति से समझौता ही उसकी एकमात्र नियति थी । अन्याय या अपमान का विरोध न तो संस्कारों में होते थे न ही इतना साहस जुटा पाती थी । बस स्त्री के त्याग और बलिदान से विवाह संबंध आजन्म चलते रहते थे ।

किन्तु आज स्थितियां एकदम उलट गई है । बेटियों की शिक्षा और हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की क्षमता ने केवल उनके व्यक्तित्व को ही नहीं निखारा, उनकी सोच और अभिव्यक्ति को भी नया आयाम दिया है । आज वह अपनी इच्छा अनिच्छा व्यक्त करने की, अपने भावी जीवन और जीवन साथी के बारे में निर्णय लेने की क्षमता और अधिकार रखती है और मुखर होकर निर्णय ले रही है । किसी भी तरह का समझौता उसे स्वीकार नहीं है । शिक्षा, करियर, जॉब आदि सभी क्षेत्रों में लड़कों से आगे निकल रही हैं । इसलिए विवाह और भावी जीवन का निर्णय भी अपनी शर्तों पर करना चाहती हैं ।

देखने–सुनने में यह सब बातें अच्छी लगती हैं । प्रगतिशील विचार धारा के अनुकूल हैं । कोई भी आधुनिक सोच वाला व्यक्ति इससे असहमत नहीं हो सकता परंतु वास्तव में समस्या यहीं है । सब कुछ अच्छा है, लेकिन सिर्फ सतही तौर पर । हम स्वयं को बहुत प्रगतिशील समझते हैं, लेकिन सिर्फ ऊपरी तौर पर ही । जैसे ही बात स्वयं पर आती है हमारा पारंपरिक रुप सामने आ जाता है । अपनी बेटी के विवाह के समय हम बेटियों के आधुनिक रुप की वकालत करते हैं किन्तु बेटे के विवाह के समय बहू का यह रुप हम स्वीकार नहीं कर पाते । बेटी के विवाह के लिए हमें अच्छा पढ़ा लिखा, ऊंचे पैकेज वाला, बड़े शहर में किसी बड़ी कंपनी में ऊंचे ओहदे पर काम करने वाला, एकल परिवार या अकेला लड़का, आदि आदि चाहिए । घर में संपन्नता हो, हर काम के लिए नौकर चाकर हो, बेटी को कुछ काम न करना पड़े, आधुनिक लाइफ स्टाइल हो, सभी तरह की आजादी हो तो ही वह सुखी मानी जाती है । परंतु बेटे के लिए बहू ढूंढ़ते समय यह मानदंड बदल जाते हैं । बहू पढ़ी लिखी और जॉब करती हो, पर घर की मान मर्यादा के अनुसार ही रहे । जॉब के साथ घर की सारी जिम्मेदारी भी संभाले, ज्यादा आधुनिक विचारों की न हो, परिवार को साथ लेकर चले आदि आदि अनेक अपेक्षाएँ स्वत: हो जाती हैं । बेटे और भावी बहू दोनों के जॉब में होने पर जॉब का समझौता बहू को ही करना होगा । ऐसे अनेकानेक मुद्दे है जो विवाह के पहले और बाद में विवादों की वजह बनते हैं । लड़कियों की उच्च शिक्षा और अच्छा करियर उनमें भी वही महत्वाकांक्षाएँ जगा रहा है जो कभी लड़कों का एकाधिकार था । हममें से अधिकांश लोग बेटी और बेटे की समान परवरिश की वकालत करते हैं किंतु बेटियों को आगे बढ़ाते हुए हमने स्वयं को इसके लिए तैयार नहीं किया । इसी तरह ''बेटी और बहू में कोई अंतर नहीं'' है, यह कहावत गढ़ने वाले भी इस पर पूर्णत: अमल नहीं कर सके ।

इस सारी समस्या का समाधान हम पर निर्भर है । इसके लिए नि:संदेह हमें अपनी सोच बदलनी होगी जो कि सरल कार्य नहीं है परंतु समय के साथ बदलाव आ रहा है । आज बहूओं को लेकर ससुराल का वातावरण पहले की तुलना में काफी सकारात्मक और सहयोगपूर्ण है । स्थिति काफी हद तक संतुलन में है बल्कि कभी कभी बेटियों का ही पलड़ा भारी नजर आता है । अत: इस ओर भी कुछ बदलाव की आवश्यकता है । विवाह के समय जितना हो सके संबंधों में पारदर्शिता और स्पष्टता रहे तो भविष्य में समस्याएँ कम होती है । अनावश्यक दुराव छिपाव से शंकायें जन्म लेती हैं । विवाह संबंध जहां तक हो सभी स्तरों पर लगभग बराबरी का हो, चाहे वह वर वधु की शिक्षा, करियर, जॉब, आर्थिक स्तर या सामाजिक प्रतिष्ठा का ही क्यों न हो ।

समय और परिस्थिति की मांग के अनुसार सामाजिक बंधनों को भी थोड़ा ढीला करके हमें अपने विकल्पों को बढ़ाना चाहिए । छोटे समाज में विकल्प भी सीमित हो जाते हैं । माता पिता और बेटियों को भी अपने स्तर और योग्यता के अनुकूल घर, वर देखना चाहिए न कि अपनी महत्वाकांक्षा के अनुसार । वर के चुनाव के समय केवल ऊंचा पैकेज, अच्छी बहुराष्ट्रीय कंपनी में जॉब या बड़े शहर की लाइफ स्टाइल को ही महत्व न दें । छोटे शहर या कस्बे में रहने वाले, स्वयं का पारंपरिक व्यापार संभालने वाले परिवारों का जीवन स्तर भी कई बार बहुत अच्छा होता हैं । उनके आर्थिक संघर्ष भी बड़े शहरों की तुलना में कम होते हैं । बेटे और बेटियों को शिक्षित के साथ ही संस्कारी भी बनायें । विवाह के पश्चात दोनों को एक दूसरे का ही नहीं दोनों परिवारों का भी सम्मान करना चाहिए ।

दोनो ओर के माता पिता भी अपनी भूमिका सकारात्मक रखें, विवाह के पश्चात बच्चों को आपसी समझ बढ़ाने के लिए समय और मौका दें तो परिवार में सुख शांति बनी रहती है । विवाह सफल होगा या नहीं इस बात की ग्यारंटी तो कोई भी नहीं दे सकता किंतु महत्वपूर्ण मुद्दों पर स्पष्ट चर्चा हो सके तो अच्छा होता है । विवाह केवल वर वधु का मिलन ही नहीं बल्कि दो परिवारों, दो विभिन्न संस्कृति और विचारधाराओं का भी मिलन होता है । परस्पर प्रेम और सौहार्द्र की भावना से जुड़े संबंधों के स्थायी होने की भी संभावना रहती है । एक दूसरे की भावनाओं को सहानुभूति और आदर भाव से समझनें का प्रयास करें और पूर्वाग्रहों से दूर रहें तो विवाह समस्या न रहकर सामाजिक संस्कार के रूप में हमेशा के लिए सुखद अनुभव ही रहेगा । – अनुपमा जैन

संस्कारों से परिपूर्ण एक विद्यालय– प्रतिभास्थली

एक लड़का पढ़ता है तो अपना नाम रोशन करता है, अपने परिवार को गौरवांवित करता है और अधिक हुआ तो कुल को ख्याति दिलाता है लेकिन एक लड़की पढ़ती है तो अपना और अपने परिवार का नाम तो रोशन करती ही है बल्कि वह दो दो कुलों की ख्याति बढ़ाती है और यदि लड़की किसी संस्कारित स्कूल में पढ़ी हो तो कहना ही क्या वह ऐसा आदर्श प्रस्तुत करती हैं कि लोग तारीफ करते नहीं थकते ।

आचार्य विद्यासागरजी महाराज की दूरदर्शिता को हम किन शब्दों में बखान करे, कहने के लिए शब्द ही नहीं है उन्होंने युवतियों को संस्कारित शिक्षा प्रदान करने के लिये, शादी के पूर्व तक उनके शील को सुरक्षित बनाये रखने एवं मर्यादाओं के साथ जीवन के निर्वाह की सोच रखते हुए प्रतिभास्थली जैसी बालिका आवास पाठशाला की नींव रखी जिसे लोगों ने हाथो हाथ बहुत आगे बढ़ाते हुए पूरा ही नहीं किया बल्कि अब तक पांच या छ: प्रतिभास्थली संचालित भी होने लगी है ।

जबलपुर, रामटेक, डोंगरगढ़, पपौरा और इन्दौर में संचालित होने वाली प्रतिभास्थली में आचार्य महाराज से ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेने वाली ब्रह्मचारिणी बहिनें अध्यापन का कार्य कराती है और आप को यह बताना भी उचित है कि आचार्य महाराज ने व्रत देने के पूर्व उन्हें योग्यता के हिसाब से उच्च शिक्षा प्राप्त करने का आशीर्वाद देते है जिससे वे स्वयं अध्यापन के कार्य में पारंगत हो सके, अब जब ब्रह्मचारिणी के परिवेश में रहने वाली अध्यापिका हमारी बच्चियों को पढ़ायेगी तो यकीन मानिये बच्चियां मात्र पढ़ने में ही अव्वल नहीं होगी बल्कि सदाचरणों से परिपूर्ण सुसंस्कारवान दो दो कुलों को रोशन करने वाली भी बनेगी ।

पुराने समय में जिस प्रकार गुरुकूल का माहौल हुआ करता था ठीक उसी तरह आज सभी प्रतिभास्थलियों में भी आवास और भोजन की व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है । शुद्ध और सात्विक भोजन के साथ साथ पौष्टिकता का भी बड़ा ध्यान दिया जाता है। सुबह का नाश्ता हो अथवा सांध्यकाल में दूध सभी को अनिवार्य रूप से दिया जाता है ताकि बौद्धिक विकास की गतिविधियों में लिप्त रहते हुए बच्चियां शारीरिक रुप से भी स्वस्थ बनी रहे ।

पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा समय समय पर बच्चियों पर होती रहती है और वे अपने विशेष आशीर्वाद से उन्हें अभिसिंचित करते रहते है तभी तो समस्त प्रतिभास्थलियों की बच्चियां भी विशेष धार्मिक नाटक या भक्ति नृत्य तैयार कर उनकी प्रस्तुतियों से समानजनों का मन मोहती है और प्रतिभास्थली के नाम का गौरव बढ़ाती है ।

वर्तमान में सभी प्रतिभास्थलियों में प्रवेश की प्रक्रियाएँ प्रारंभ है यदि आप भी अपनी बच्चियों को संस्कारित बनाना चाहते हैं तो निकटतम प्रतिभास्थली में संपर्क कर उनके मानसिक और बौद्धिक विकास की परीक्षा दिलायें । यदि बच्ची द्वारा दी गई परीक्षा में सफल होती है तो उसे प्रतिभास्थली में पढ़ाई करने का सौभाग्य प्राप्त होगा इसलिये देर ना करें, कहीं सोचते सोचते समय ना निकल जाये... ❊ **डोंगरगढ़** – मो. 8349920695, 9300622051 ❊ **पपौराजी** – मो. 6263121898 ❊ **जबलपुर** – मो. 9685322388 ❊ **रामटेक** – मो. 9405707781, 9359156546 ❊ **इन्दौर** – मो. 9754626800 । संकलन – नागेन्द्र जैन, इन्दौर

नि:शक्त रोगियों की सेवा करना ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा

पुष्पेन्द्र जैन 'मिन्टू', देवेन्द्र नगर । दिगम्बर जैन धर्मशाला में दिगम्बराचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के शुभाशीर्वाद से एवं जनसंत मुनि श्री विरंजनसागरजी व मुनि श्री विश्वद्रगसागरजी गुरुदेव की प्रेरणा से 25 मार्च को प्रतिष्ठाचार्य पं. संकेत जैन (विवेक) द्वारा आगमोक्त विधिविधान पूर्वक चंद्रप्रभ दि. जैन नि:शुल्क औषधालय का नगर निवासियों द्वारा शुभारंभ किया गया ।

नगर के इतिहास में यह अनुकरणीय पहल है । इस औषधालय के संचालन व समुचित क्रियान्वयन हेतु समिति का गठन एवं समुचित फंड का संचय भी किया गया, औषधालय को पूर्णतया अहिंसक रुप से संचालित किया जायेगा । इसमें जो औषधियाँ रोगियों को दी जायेगी वह अतिप्राचीन आयुर्वेदिक जैन ग्रंथ कल्याणकारकमष्की संहिता के माध्यम से शुद्ध व मर्यादित होंगी । नगर के यशस्वी चिकित्सक डॉ. प्रमोद जैन, डॉ. आर.बी. सेन, डॉ. सुरेन्द्र पिम्पले, डॉ. अभिषेक जैन, डॉ. संतोष जैन, डॉ. जयहिंद जैन,डॉ. देवेन्द्र कुशवाहा, डॉ. सुरेन्द्र जैन ने नि:शुल्क रुप से सेवा देने हेतु स्वीकृति भी दी है ।

जनसंत विरंजनसागरजी ने समस्त समाज को मंगल आशीर्वाद व सत्प्रेरणा देते हुये कहा निशक्त तथा रोगियों की सेवा करना सबसे बड़ी प्रभु पूजा है प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर है बस आपके श्रद्धा व समर्पण के नेत्र होने चाहिये । मुनिश्री ने कहा कि उपकारी के उपकार को भूलना नहीं चाहिए, और उपकार करने वाले को उपकार करके सम्मान की लालसा नहीं रखनी चाहिए । दूसरे का भला करने से स्वयं का भला स्वत: हो जाता है, जैन दर्शन में अहिंसात्मक तरीके से शरीर को स्वस्थ रखने के उपाय कहे गये है जो आयुर्वेद से संभव हैं, यह औषधालय जैन मंदिर के समीप है ताकि भगवान की कृपा, साधुओं का आशीर्वाद और चिकित्सकों की औषधि जब तीनों असर दिखायेंगे तो दुनिया में कोई भी बीमारी ऐसी नहीं जो ठीक न हो सके । चिकित्सकों ने परमार्थ के लिये उपकार के लिये सेवा और समय दिये वह सब साधुवाद व सम्मान पात्र हैं, डॉक्टर तन की रक्षा करेंगे, साधुसंत मन की विचारों की सुरक्षा करेंगे । संतों की साधना के बल पर हर नागरिक सुखद अहसास पा रहा है । आज औषधालय है भविष्य में पूर्ण अस्पताल हो जायेगा । बच्चा विद्यालय जाता है तो अध्यापक के संरक्षण में होता है बीमार हो तो चिकित्सकों के संरक्षण में तथा जीवन संवर्धन हेतु संतो साधु ओं गुरुओं के संरक्षण में आना आवश्यक होता है । श्रावक मन के अनुसार चलता है संत मन को अपने अनुसार चलाता है । आयोजन में कुंवर अजय सिंह, अंगूरीबाई कैलाश जैन, प्रेमचंद जैन, रविन्द्र जैन, गुलजारीलाल जैन के साथ समाज के कई संगठनों ने तन, मन, धन से सहयोग देने की स्वीकृति दी है । इस अवसर पर विमर्श जागृति मंच ने घोषणा की, कि देश की रक्षा में तैनात सैनिक परिवारों को चिकित्सा सेवा उनके घर तक पहुंचाने का कार्य संगठन का हरेक सदस्य करेगा ।

परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद

प्रधान संपादक

सिंघई राजेन्द्र जैन, 9424013136

सह संपादिका

श्रीमती अनुपमा–रजनीश जैन, 9009066884
श्रीमती साधना–सुनील जैन, 8602696165

कोषाध्यक्ष

सुधेशकुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक

राजेन्द्रकुमार जैन, सायकलवाले 9425353972
खुशालचंद जैन, 9302123879
कोमलचंद जैन, 9329524227

संयोजक एवं प्रकाशक

बाहुबली जैन, 9827247847

समाज के श्रेष्ठीजनों से पुन: सादर अनुरोध है कि समाज की एकमात्र सामाजिक पत्रिका गोलालारीय दर्शन के निरंतर प्रकाशन के लिए आप शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, विशेष सहयोगी बनकर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान करें।

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

विशेष सहयोगी

अनिल कुमार ज्ञानचंद जैन, गंजबासौदा

सहयोगी

संजय गुलाबचंद जैन, इन्दौर
एड. खुशालचंद जैन, विदिशा
नेमीचंद जैन, गंजबासौदा 'खजुराहोवाले'

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
सहयोगी सदस्य	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855
IFSC Code: SBIN0030134
में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट – 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	300/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड, इन्दौर पर भेंजे।

महावीर जयंती 17 अप्रैल 2019 के अवसर पर प्रासंगिक आलेख

भगवान महावीर की अहिंसा से आंतकवाद का खात्मा संभव

तीर्थंकर महावीर की अहिंसक क्रांति से ही विश्व में शांति संभव

जैन परम्परा के 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर है भगवान महावीर। आपको वर्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर के नाम से भी जाना जाता है। ईसा के 599 पूर्व कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला की एक मात्र संतान के रूप में चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को आपका जन्म हुआ। 30 वर्ष तक राजाप्रासाद में रहकर आप आत्म स्वरुप का चिंतन एवं अपने वैराग्य के भावों में वृद्धि करते रहे। 30 वर्ष की युवावस्था में आप महल छोड़कर जंगल की ओर प्रयाण कर गये एवं वहां मुनि दीक्षा लेकर 12 वर्षों तक घोर तपश्चरण किया। तदुपरांत 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पदविहार कर आपने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्म का उपदेश दिया। ईसा से 517 वर्ष पूर्व कार्तिक अमावस्या को उषाकाल में पावापुरी में आपको निर्वाण प्राप्त हुआ।

भगवान महावीर सहज साधक थे। किसी प्रकार के प्रदर्शन या उपचार का उनकी दृष्टि में कोई मूल्य नहीं था। भगवान महावीर जन साधारण के बीच रहे और साधारण रुप में रहे। समता भगवान महावीर की साधना का उद्देश्य था और वही फलश्रुति बन गयी। उन्होंने किसी भी परिस्थिति में अपने समत्व को धूमिल नहीं होने दिया। सत्कार और तिरस्कार के मध्य उनके संतुलन का सेतु प्रकम्पित नहीं हुआ। अनुकूलता और प्रतिकूलता उनके मन को प्रभावित नहीं कर सकी।

भगवान महावीर के दर्शन के तीन सिद्धांत अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह बहुत सी आधुनिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकते है। इन्होंने अनेकांत सिद्धांत का आदर्श लेकर मानवतावाद की जड़ मजबूत की। विचारों की टकराहट से ही विभिन्न धर्मों में परस्पर द्वेष किया जाता रहा है। भगवान महावीर ने अनेकांत दृष्टिकोण द्वारा इसका समाधान किया है। इसके अंतर्गत जिसमें सत्याग्रह, व्यापकता, उदारता, सहिष्णुता, अहिंसा, एकता आदि गुण प्रकट होंगे, वह विकास करता हुआ नर से नारायण बन जायेगा। भगवान महावीर ने हमें अनेकांत दृष्टि देकर वस्तु के वास्तविक स्वरुप का ज्ञान कराया है। साथ ही साथ हमारे भीतर वैचारिक सहिष्णुता और प्राणीमात्र के प्रति सदभाव का बीजारोपण भी किया है। इस तरह का उपदेश सार्वभौमिक और विश्व शांति की ओर ले जाने वाला है।

भगवान महावीर सामाजिक क्रांति के शिखर पुरूष थे। महावीर का दर्शन अहिंसा और समता का ही दर्शन नहीं है बल्कि क्रांति का दर्शन है। उन्होंने एक उन्नत और स्वस्थ समाज के लिए नये मूल्य नायक का सूत्रपात किया। वर्तमान युग में नैतिकता का पतन जिस वेग से हो रहा है, उसकी कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। बहुमुखी अध:पतन की इस विभीषिका में भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह संबंधी सिद्धांत ही सर्वोदयी संभाग का प्रदर्शन कर सकते हैं। उनके सर्वोदय एवं साम्यवादी सिद्धांत स्वस्थ समाज, राष्ट्र एवं विश्व का नवनिर्माण कर सकते है।

भगवान महावीर का जीवन मानवीय मूल्यों की स्थापना की एक अनवरत और शाश्वत ज्योति की कहानी है। वे मानते हैं जीवन को समान सुख और दुख की अनुभूति होती है। उन्होंने बताया कि धर्म आराधना में जाति, वर्ग, लिंग आदि के भेद के लिए कोई स्थान नहीं है। उन्होंने साम्प्रदायिकता और जातीयता को दूर किया। अहिंसा परमो धर्म जैसे महान मूल्य की स्थापना कर भगवान महावीर ने कहा कि सदाचार और नैतिकता का जीवन व्यतीत करते हुए व्यक्ति स्वयं ईश्वरत्व को प्राप्त कर सकता है। दूसरों की भलाई करने, पीड़ितों की रक्षा करने, सहायता करने और पद दलितों को सन्मार्ग की राह दिखाने को ही वे धर्म की आंतरिक क्रियायें मानते थे।

भगवान महावीर के उपदेशों को आज नए संदर्भों में देखने की आवश्यकता है। हम जहां तहां खनिजों की खोज में पृथ्वी को खोद रहे हैं, जल और वायु को प्रदूषित कर रहे हैं, पर्यावरणविद् स्थावरों की इस हिंसा से चिंतित है। विकास के नाम पर विलासता बढ़ रही है और साथ ही अमीर और गरीब के बीच की खाई भी बढ़ रही है। बड़े कष्टों को कौन कहे ! हम तो अहंकार पर छोटी सी चोंट पड़ने पर संसार को सिर पर उठा लेते हैं। पचासों बाते हैं, महावीर जन्म कल्याणक पर उनमें से कोई पांच बातें ही तो ग्रहण करें। ऐसा करके हम अपना आत्मकल्याण कर सकेंगे।

अहिंसा और अनेकांत महावीर के उपदेशों का मर्म थे। उन्होंने किसी भी जीव की हत्या न करने, किसी को पीड़ा न पहुंचाने, किसी को दास न बनाने, किसी को यातना न देने और किसी का शोषण न करने का उपदेश दिया। द्वेष और शत्रुता, लड़ाई झगड़े और सिद्धांतहीन शोषण के संघर्षरत विश्व में जैन धर्म का, अहिंसा का उपदेश न केवल मनुष्य के लिए बल्कि जीवन के सभी रूपों के लिए एक विशेष महत्व रखता है। इसमें करूणा, सहानुभूति, दान, विश्वबंधुत्व और सर्वक्षमा समाविष्ट हैं। अनेकांत और उसका मर्म अहिंसा प्रतिकूल चिंतन और विचार जागृत होने पर सहिष्णु बने रहने का उपदेश देता है।

भगवान महावीर के मुख्य पांच सिद्धांतों में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह मुख्य थे। अहिंसा उनका मूलमंत्र था यानी 'अहिंसा परमो धर्म' क्योंकि अहिंसा ही एकमात्र ऐसा शस्त्र है जिससे बड़े से बड़ा शत्रु भी अस्त्र शस्त्र का त्याग अपनी शत्रुता समाप्त कर आपसी भाईचारे के साथ पेश आ सकता हैं।

महावीर ने अहिंसा को बड़े व्यापक अर्थ में लिया है। प्राणियों का बध करना ही उनकी दृष्टि में हिंसा नहीं है वरन जिन कारणों से दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुंचती हो, कष्ट और दुख पहुंचता हो वह सब हिंसा है और ऐसा कोई कर्म न करना जिससे किसी को शारीरिक या मानसिक आघात पहुंचता हो अहिंसा के अंतर्गत आता है। संसार के प्रथम और अंतिम व्यक्ति हैं भगवान महावीर, जिन्होंने अहिंसा को बहुत ही गहरे अर्थों में समझा और जिया।

महावीर अहिंसा के दृढ़ उपासक थे, इसीलिए किसी भी दिशा में विरोधी को क्षति पहुंचाने की वे कल्पना भी नहीं करते थे, उसको भी नम्रता और मधुरता से ही समझाते थे। महावीर स्वामी का सबसे बड़ा सिद्धांत अहिंसा का है, जिनके समस्त दर्शन, चरित्र, आचार–विचार का आधार एक इसी अहिंसा सिद्धांत पर है। उनका कहना था अहिंसा ही सुख शांति देने वाली है। अहिंसा ही संसार का उद्धार करने वाली है।

महावीर स्वामी ने अपने समय में जिस अहिंसा के सिद्धांत का प्रचार किया, वह निर्बलता और कायरता उत्पन्न करने के बजाय राष्ट्र निर्माण और संगठन करके उसे सब प्रकार से सशक्त और विकसित बनाने वाली थी। उसका उद्देश्य मनुष्य मात्र के बीच शांति और प्रेम व्यवहार स्थापित करना था, जिसके बिना समाज कल्याण और प्रगति की कोई आशा नहीं रखी जा सकती। सचमुच महावीर अहिंसा के महान साधक एवं प्रयोक्ता थे। महावीर की अहिंसा जीवों को न मारने तक सीमित नहीं थी। उसकी सीमा सत्य–शोध के महाद्वार का स्पर्श कर रही थी। इसीलिए महावीर स्वामी की मूल शिक्षा अहिंसा है।

भगवान महावीर स्वामी ने अहिंसा का जितना सूक्ष्म विवेचन किया है। वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। महात्मा गांधी ने अहिंसा के बल पर ही अपने देश को स्वतंत्रता दिलायी। अहिंसा केवल निषेधात्मक ही नहीं होती, अपितु विधेयात्मक भी होती है। तीर्थंकर महावीर के प्रत्येक उपदेश में अहिंसा निहित है। उन्होंने अहिंसक क्रांति के बल पर विश्वबंधुत्व और विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त किया। बाह्य हिंसा की अपेक्षा यदि मानसिक हिंसा दूर हो जाय तो अहिंसक क्रांति का मार्ग आसानी से प्रशस्त हो सकता है। सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना ही आधुनिक युग की सच्ची अहिंसा है। अहिंसा सभी धर्मों का मूलाधार है। कोई भी धर्म हिंसा की आज्ञा नहीं देता। अहिंसा की रक्षा के लिए हमारी प्रत्येक क्रिया निर्मल होनी चाहिए। भगवान महावीर की पहले की अपेक्षा आज अब अधिक जरूरत है। वाणी में स्याद्वाद, विचारों में अनेकांतवाद, आचरण में अहिंसा का पालन ही महावीर ने श्रेष्ठ धर्म बताया। वैचारिक हिंसा से यदि बचा जाय तो अहिंसा का का मार्ग प्रशस्त होता है। भगवान महावीर के समय सबसे बड़ी बुराई वैचारिक मतभेद की पनपी थी और आज भी दुनिया इसी कारण आंतक से संघर्ष कर रही है। इसके लिए महावीर ने स्याद्वाद और अनेकांत का अमोघ सूत्र दिया, जिससे यह बुराई समाप्त हो सकती है। आंतकवाद के सफाये के लिए आज महावीर स्वामी की अहिंसा की परम आवश्यकता है। भगवान महावीर अपने आचरण व व्यवहार के बल से तीर्थंकर कहलाये।

आज जरुरत इस बात की है कि शत्रुता का अंत हो जाए और विश्व में शांति स्थापित हो, क्योंकि बैर से बैर कभी नहीं मिटता। मैत्री और करूणा से ही मानव के मन में, घर में, नगर और देश तथा विश्व में शांति और सुख, अमन चैन की धारा बहती है।

आज देश, विश्व बड़े बुरे दौर से गुजर रहा है, हम बड़े बड़े बमों, आणविक शक्ति से देश में शांति की स्थापना का सपना पाल बैठे हैं। मैं दृढ़ निश्चय से कह सकता हूँ विश्व को आंतकवाद जैसी भयंकर बुराई पर काबू पाने के लिए तीर्थंकर महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा एवं अनेकांत स्याद्वाद के सिद्धांत को अपनाये तो सार्थक हल निकल सकता है।

अहिंसा के महानायक भगवान महावीर ने जल, वृक्ष, अग्नि, वायु और मिट्टी तक में जीवत्व स्वीकार किया है। उन्होंने अहिंसा की विशुद्ध व्याख्या करते हुए जल और वनस्पति के संरक्षण का भी उद्घोष किया। जल के मितव्ययता पूर्ण उपयोग और वनस्पति की सुरक्षा की बात कही। उनके सिद्धांतों पर चलकर हमें वृक्ष बचाओ, संसार बचाओं उक्ति को अमल में लाना होगा। प्रकृति व पर्यावरण के विरुद्ध चलने से भूकंप, सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोपों का हमें सामना करना पड़ रहा है। अत: महावीर स्वामी के सिद्धांतों को आत्मसात कर पर्यावरण व प्रकृति की सुरक्षा का संकल्प हमें लेना होगा। भगवान महावीर का मार्ग आज के युग की समस्त समस्याओं, मूल्यों की पुन: स्थापना, जीवन में नैतिकता का समावेश, भोगवादिता, संग्रह तथा हिंसा से बचने के लिए सही रास्ता है। महावीर का संदेश आज राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों मे उपयोगी है। भगवान महावीर आदर्श पुरुष थे। उन्होंने मानवता को एक नई दिशा दी है। उनके बताये हुए अहिंसा, सत्य आदि मार्गों पर चलकर विश्व में शांति हो सकती है।

– डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

पंचकल्याणक महामहोत्सव की प्रथम वर्षगांठ पर भव्य विमानोत्सव कार्यक्रम संपन्न ।

विशाल जैन, पवा । तालबेहट के नये बस स्टेंड पर स्थित श्री 1008 वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर में सराकोद्धारक राष्ट्रसंत आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज के ससंघ मंगलमय सानिध्य में गत वर्ष श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव विश्व शांति महायज्ञ एवं हवन का भव्य आयोजन किया गया था । जिसकी प्रथम वर्षगांठ पर आचार्य प्रवर विद्यासागरजी महाराज के मंगलमय आशीर्वाद से श्रीजी की भव्य शोभा यात्रा निकालकर धूमधाम से वार्षिकोत्सव मनाया गया । सुबह नित्यमय अभिषेक-शांतिधारा पूजन के उपरांत युवा विधानाचार्य ब्र. अभिषेक जैन मुंगेली हैदराबाद के निर्देशन एवं निलेश एंड पार्टी, बांदरी सागर के मधुर संगीत में श्री 1008 पंचकल्याणक महामंडल विधान का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने श्रद्धा और भक्ति के साथ अर्घों की आहुतियां दी एवं विश्व शांति की मंगल भावना से हवन किया । पं. विनोदकुमार शास्त्री बबीना ने ध्वजारोहण की क्रिया संपन्न करायी । मंगल आरती का सौभाग्य महिला मंडल एवं बालिका मंडल वासुपूज्य शाखा को मिला । दोपहर की बेला में विमानोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत वासुपूज्य दि. जैन मंदिर से श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी जिसमें तैलीय चित्रों की

झांकी, भगवान आदिनाथ स्वामीजी को विमान में लेकर श्रद्धालु, बग्गी में सवार धर्मध्वजा लेकर श्रेष्ठीजन, डी जे बैंड की धार्मिक धुनों पर नृत्य करते युवा, मंगली गीत गाती महिलायें, सत्य-अहिंसा एवं जियो और जीने दो के नारे लगाते हुए धर्मावलंबियों ने नगर भ्रमण कर पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से वापस नये मंदिरजी पहुँचे, भक्तों ने मंगल आरती उतारी एवं विमानजी का स्वागत किया । तत्पश्चात पं. विजयकृष्ण शास्त्री ने कलशाभिषेक एवं फूलमाल की क्रियाऐं संपन्न करायी । 3 मार्च को निर्वाण लाडू चढ़ाकर भगवान मुनि सुव्रतनाथ का मोक्ष कल्याणक एवं 5 मार्च को भगवान वासुपूज्य स्वामी का जन्म कल्याणक महामहोत्सव मनाया गया । बच्चों की दीप सजाओ प्रतियोगिता में आगम जैन मानू प्रथम, पवित्र जैन बेटू द्वितीय एवं भाविता जैन भवि तृतीय रहे । 30 मार्च को आचार्यश्री विद्यासागरजी श्रमण संस्कृति पाठशाला के शुभारंभ की प्रथम वर्षगांठ पर भक्तामर महामंडल विधान एवं अखंड पाठ का आयोजन किया गया । 31 मार्च को रात्रि में पाठशाला के बच्चों ने राजुल मोदी-नीतू जैन के निर्देशन में शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी । कार्यक्रम को सफल बनाने में मोदी शिखरचंद्र, राजकुमार जैन, अशोक कुमार, देवेन्द्र कड़ेसरा, अध्यक्ष पुष्पेन्द्र विरधा, कोषाध्यक्ष अनिल गुंदेरा, अनिल कुमार श्रेयांश जैन, देवेन्द्र बसार, राकेश सतभैया, सुशील मोदी, प्रदीप एडवोकेट, हितेन्द्र कुमार, प्रीतेश पवैया, कपिल मोदी, अरविंद कुमार विकास भंडारी, चक्रेश कुमार स्वतंत्र जैन, महेन्द्र नयाखेड़ा, विजय मोदी, वीरेन्द्र बामौर, जितेन्द्र बड़ौरा, विनय कुमार, अजय जैन मोनू, सुरेन्द्र विरधा, आदेश मोदी, मनीष कुमार, सुधीर जैन आदि का सहयोग रहा एवं सैकड़ों श्रद्धालु मौजूद रहे । संचालन पं. विनोद कुमार शास्त्री बबीना एवं आभार व्यक्त महामंत्री प्रवीनकुमार जैन कड़ेसरा ने किया ।

यहां चरखा ही ब्रांड है, देशभर में हथकरघा की जगी अलख

आमोद जैन, कानपुर । भारतीय इतिहास में कबीर और महात्मा गांधी के बाद संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागरजी ने चरखे को महज यंत्र नहीं बल्कि स्वावलंबन का प्रेरणास्रोत निरुपित करते हुए स्वरोजगार की एक नई राह प्रशस्त कर दी है । उनकी प्रेरणा से जबलपुर में नर्मदा के तिलवारा घाट के किनारे दयोदय तीर्थ परिसर में प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ में चल चरखा पड़ा है । इसकी शुरुआत 2014 में बीना बारह, सागर में हुई थी । इसके बाद सागर के भाग्योदय तीर्थ, कुंडलपुर, अमरकंटक, शहपुर भिटौनी, मुंगावली, कुरई, टीकमगढ़, ललितपुर, पपौराजी और खजुराहो सहित देश के विभिन्न हिस्सों में श्रमदान - हथकरघा और चल चरखा सरपट दौड़ने लगे है ।

हथकड़ी से हथकरघा तक - पूर्व डीएसपी डॉ. रेखा जैन बताती है कि उन्होंने केन्द्रीय जेल सागर में डॉ. नीलम जैन व अमित जैन के साथ मिलकर हथकड़ी से हथकरघा की यात्रा को साकार कर दिखाया है । इसकी प्रेरणा भारत को भारत ही कहे जाने के हिमायती, स्वदेशी के ध्वजवाहक आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद से मिली है । एक जेल में कैदियों को हथकरघे से जोड़ने का नतीजा यह मिला कि मध्यप्रदेश की सभी जेलों तक यह प्रकल्प फैल गया और अब दिल्ली की तिहाड़ और यूपी की अनेक जेलों में भी चरखे-हथकरघे की खुशबू फैलाने के लिये हमारी टीम को आमंत्रित किया गया है ।

हथकरघे से शत प्रतिशत हस्त निर्मित वस्त्रों का उत्पादन - आचार्यश्री के आशीर्वाद से अनेको स्थान पर संचालित हथकरघा केन्द्रों पर शत प्रतिशत हस्त निर्मित वस्त्रों का उत्पादन जारी है । इस उपक्रम में सैकड़ों महिलायें हथकरघा का हुनर सीख रही है व स्वलंबी होकर अपने परिवार के स्वाभिमान को बढ़ाया है । इसी उपक्रम के जरिये पुरुष वर्ग भी स्वरोजगार की दिशा में सक्रिय हो रहा है ।

गांधी चौक मंदिर में पंचकल्याणक महोत्सव की प्रथम वर्षगांठ पर शांति विधान का आयोजन

शांतिकुमार जैन, गंजबासौदा । श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर, गांधी चौक में पंचकल्याणक की प्रथम वर्षागंठ के अवसर पर समाजजनों द्वारा शांतिमय शांति विधान का आयोजन किया गया । शांति विधान का आयोजन सृजन भैया के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ । जिसमें समाज के पुर्ण्याजक परिवारों ने बढ़ चढ़कर सहभागिता निभायी । इस आयोजन में समाज के अध्यक्ष नेमीचंद जैन एडवोकेट, पवन जैन, नवीन भंडारी, मुकेश कुमार, धर्मेन्द्र जैन, जितेन्द्र जैन, राजकुमार चार्ली, विकास जैन, दमरुलाल जैन, अनिलकुमार जैन एडवोकेट, अमित जैन, ज्ञानचंद जैन बरबईवाले, महेन्द्र भंडारी, मनोज भंडारी, रिषभ जैन, सिद्धार्थ भुजंग, विनोद कुमार शिक्षक सहित समाज के गणमान्य समाजजन सपरिवार शामिल हुये ।

एक बार फिर गौरवांवित किया...

दिनांक 31.03.2019 को एम.बी.बी.एस की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर भोपाल की तीन बेटियों ने गोलालारीय समाज के साथ साथ अपने परिवार का नाम भी रोशन किया ।

डॉ. स्वप्निल जैन
ममता-संजय जैन
भोपाल

डॉ. जूही जैन
संध्या-संजय जैन
(अलंकार)

डॉ. अंतरा जैन
अंजू-डॉ.राजेश जैन
भोपाल

आपके परिवार में संपन्न मांगलिक अवसर जैसे कि 25वीं या 50वीं विवाह वर्षगांठ या बच्चों के विवाह का शुभ अवसर हो या जन्मदिवस की सुहानी यादें इनका विज्ञापन 'गोलालारीय दर्शन' पत्रिका में प्रकाशित कर इस सुखद एहसास को समाजजनों के साथ सांझा कर सकते है । ऐसे अवसरों पर हम लाखों रुपये खर्च कर देते है, हमारा आपसे सादर अनुरोध है कि अपने समाज की एकमात्र पत्रिका में मांगलिक प्रसंगों का विज्ञापन प्रदान कर गोलालारीय दर्शन को आर्थिक संबल कर पत्रिका के नियमित प्रकाशन में अद्वितीय सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी छोटी सी सहायता राशि हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है।

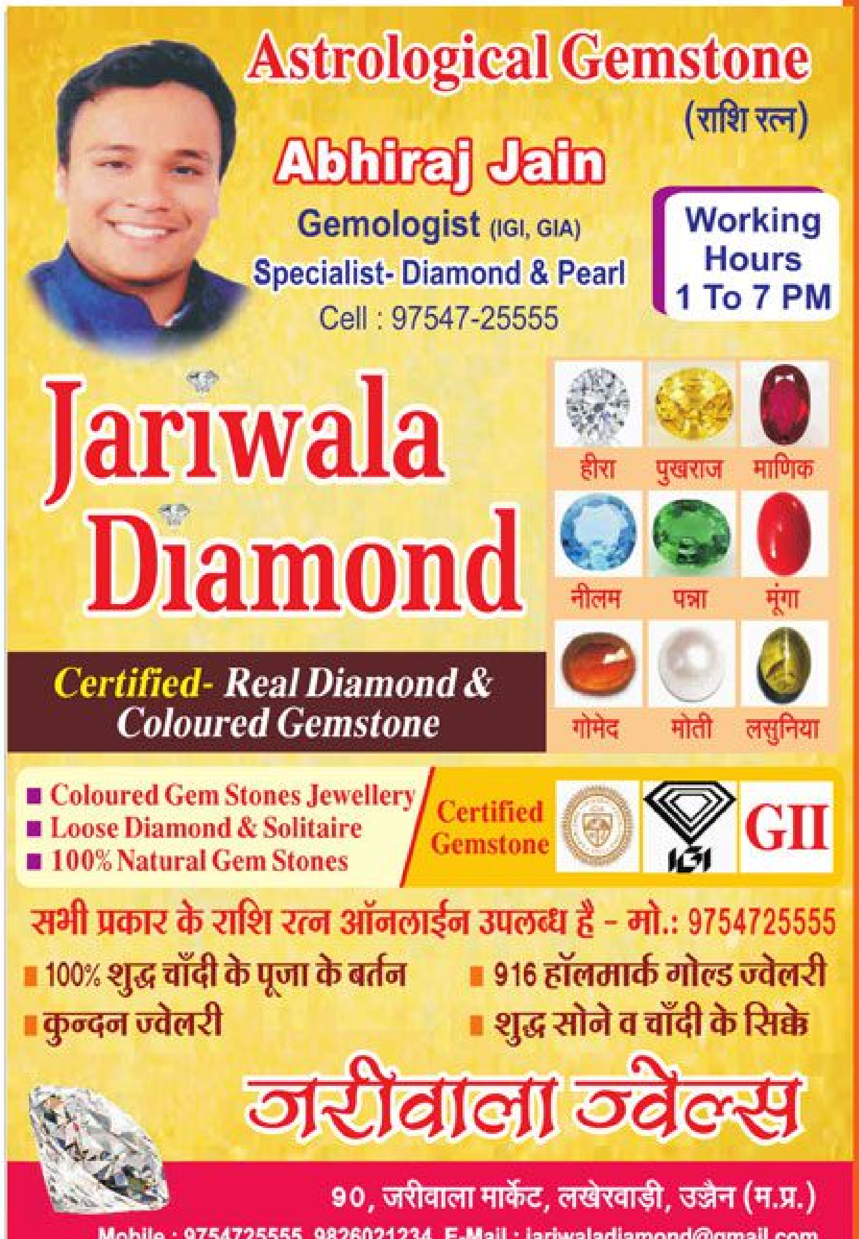

भ्रष्टाचार मुक्त भारत को जन समर्पण व न्यायप्रिय शासक की दरकार

मुनि सरल सागर जी महाराज से विशेष भेंट वार्ता

ज्ञान, ध्यान, तप में लीन होकर तीन दशकों से सतत् साधनारत दिगम्बर मुनिश्री सरल सागरजी महाराज ने अपने जीवन को सिद्धांतों के आधार पर जीना दृढ़ता से स्वीकार किया है । उन्हें प्रलोभन, प्रतिष्ठा, यश या अनावश्यक भक्तों की भीड़ की दरकार नहीं है । उनका धार्मिक, सामाजिक व्यवस्था के प्रति चिंतन स्पष्ट हैं, राजनीति में शुचिता के प्रति सीधी सटीक सिद्धांत आधारित अभिव्यक्ति देने वाले सरल सागरजी अपनी प्रशंसा या निंदा की चाह के बिना वही बोलते है जो समाज के बेहतर संचालन के लिये जरुरी है और धर्म सम्मत है । झांसी - ललितपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बबीना में बने रिषभ विहार के जिन मंदिर प्रांगण में वर्तमान में प्रवास कर रहे मुनिश्री सरल सागरजी महाराज ने निरंतर स्वाध्याय, शास्त्रों के अध्ययन और लोकेषणा से दूर अपने आत्म कल्याण के लिये शास्त्रानुकूल जीवन जीने का प्रयोगिक वातावरण बनाया हैं। यहां का शांत वातावरण , हरियाली, परमेश्वर की भक्ति से उत्पन्न विशुद्ध हवाएं उनकी साधना में सहयोग कर रही हैं तो वहीं पुण्यात्मा भक्तों में जीवन के विविध क्षेत्रों में शुचितापूर्ण मार्ग भी प्रशस्त कर रही हैं । - प्रवीण कुमार जैन, दैनिक विश्व परिवार, झांसी

बबीना । भारत से भ्रष्टाचार हटाना है तो वर्तमान चुनाव के तरीको को बदलना होगा, जाति, धन और बल के आधार पर चुना गया शासक कभी भी भारत की तस्वीर नहीं बदल सकेगा, शासक के अनुसार जनता आचरण करती है यथा राजा तथा प्रजा सूक्ति सही हैं, शासक को शासन की सम्पत्ति और निजी सम्पत्ति को भेद समझना होगा । शासन की सम्पत्ति शासन की है वह निजी की तरह प्रयोग करते हो तो कहां से भ्रष्टाचार मुक्त भारत और रामराज्य की कल्पना साकार होगी ?

आचार्य विद्यासागरजी महाराज के अनूठे शिष्य है मुनि श्री सरल सागरजी उन्हीं ने रिषभ विहार प्रांगण में दर्शनार्थ गए शिष्यों से यह बात कही । मुनिश्री ने कहा कि चाणक्य से निजी मुलाकात करने जो सज्जन आए तो चाणक्य ने जलता हुआ दीपक बुझा कर नया दीपक जलाया था, प्रकाश होते ही सज्जन ने दीपक बुझाने का कारण पूछा तो चाणक्य ने कहा कि अभी में शासन का कार्य कर रहा था, दीपक में तेल सरकारी है, आप से निजी मुलाकात में जो दीपक जला है वह मेरा निजी दीपक हैं । शासन के तेल का दुरुपयोग नहीं कर सकता । आज के जनप्रतिनिधियों, सरकार में बैठे लोगों को यह उनके जीवन के कल्याण का मूलमंत्र है । सरकार के पैसों का मूल्य समझिए, आये दिन समस्याओं को लेकर आंदोलन करना, आग लगाना, रेल, वाहन जलाना और सरकार की जन धन हानि करना सर्वथा अनुचित हैं, वह पैसा देश के नागरिकों द्वारा कर के रूप में अथवा अन्य सरकारी स्रोतों से है । जब आपको यह समझ आने लगेगी कि सरकारी धन सम्पत्ति को नष्ट करना अपने ही हाथ पैर काटने जैसा है, तब आप देश के समर्पित सपूत होंगे । प्रजातंत्र की सफलता का राज यह है कि देश के नागरिक अपने भारत के प्रति समर्पित हो, आप अकेले ही स्वच्छ, सुंदर, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ भारत की तस्वीर पेश कर सकते हैं उन्होंने उदाहरण सुनाया कि एक विदेशी भारत के एक गांव में भ्रमण कर रहा था, उसने देखा यहां फल नहीं बिकते, तो कहा कि कैसा गांव है यहां खाने को फल भी नहीं मिलते, तभी एक बच्चे ने सुन लिया वह दौड़ कर गया और घर में जो फल रखे थे लाकर विदेशी को दे दिए, विदेशी व्यक्ति ने मूल्य पूछा तो लड़के ने इतना ही कहा कि इन फलों का मूल्य यह है कि अपने देश जाकर यह मत कहना कि वहां के गांव में फल नहीं मिलते। यह संदेश है कि जरूरी नहीं शासक, अधिकारी या जनप्रतिनिधि ही हमारे देश की छवि बनाएं, हरेक नागरिक इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । अमेरिका का दूसरा उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि जब एक भारतीय सार्वजनिक बाथरूम में अपनी घड़ी भूल गया, कुछ घंटे बाद जब उसे याद आया तो उसने अपनी अमरीकी दोस्त से कहा कि मैं घड़ी बाथरुम में भूल गया था पता नहीं कौन चुरा ले गया होगा, तब उसकी मित्र रोने लगी, भारतीय ने कहा मत रो कोई बात नहीं तब उसने कहा कि मैं इसलिए नहीं रो रही कि आपकी घड़ी छूट गई हैं बल्कि इसलिए रो रही हूं कि आपने मेरे देशवासियों पर चोर होने का शक किया है । वस्तुत: आपकी घड़ी वहीं मिलेगी, और घड़ी मिल भी गई ।

जापान में हीरोशिमा और नागासाकी पर हमला हुआ सब कुछ तबाह हो गया था वहां, फिर से कैसे आबाद हो जापान यह पूछा गया तो सुना है कि बम बरसाने वालों ने कहा था कि देशवासियों में समर्पण का भाव पैदा कर दो और वहीं हुआ कुछ ही वर्षों में जापान फिर उठ खड़ा हुआ । तब कहना यह है कि अपने गांव, शहर, प्रदेश और देश के प्रति समर्पण जाग्रत करना होगा । वर्तमान परिस्थिति में सिद्धांतों की इतनी ऊंचाईयां सफल होना संभव है ? इस सवाल पर मुनि श्री कहते हैं कि हां है, शर्त यह है कि बुद्धिजीवी इन संदेशों को आत्मसात कर जन-जन तक पहुंचाएँ । जनप्रतिनिधियों के सांसद विधायक चुने जाने की वर्तमान प्रक्रिया को सिरे से नकारते हुए मुनिश्री का कहना है कि सब अधिकारी चुने जाने की परीक्षा है, उसकी तैयारी है तो फिर विधायक/सांसद/मंत्री कौन होगा इसका चुनाव भी योग्यता के आधार पर होना चाहिए न कि जाति, वर्ग, धन और बल के आधार हो । अगर शासक सिद्धांत आधारित मानवीय मूल्यों को समझने वाला और संवेदनशील होगा तो भारत ही क्या कोई भी देश हो वहां या वहां से आंतक, युद्ध, भ्रष्टाचार, अपराध नियंत्रित होंगे ही होंगे । अपना अमूल्य वोट देशहित में अवश्य करें ।

* विनम्र श्रद्धांजली *

श्री भागचंदजी जैन पवईवाले का देवलोकगमन दिनांक 7 जनवरी को इन्दौर में हो गया । आप अत्यंत ही सरल हृदयी एवं धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाले व्यक्तित्व थे । आपकी स्मृति में परिवारजनों ने समाज को 11000 रु. एवं गोलापलारीय दर्शन को 2100 रु. की राशि भेंट स्वरुप प्रदान की ।

श्री सुरेशचंदजी जैन का देवलोकगमन दि. 13 जनवरी को इन्दौर में हो गया । आप सरल स्वभावी व मिलनसार व्यक्ति थे । आपकी स्मृति में परिवारजनों ने समाज को 11000 रु. की राशि भेंट स्वरुप प्रदान की ।

श्री दीपचंदजी जैन का देवलोकगमन दि. 25 जनवरी को रायसेन में हो गया । आप गोलालारीय समाज के विशिष्ट व्यक्ति थे । आप जैन समाज कांग्रेस पार्टी व नगर पंचायत के आधार स्तंभ रहे है । आप गोलालारीय दर्शन पत्रिका के संरक्षक सदस्य थे । इन्दौर समाज को आपका मार्गदर्शन समय समय पर मिलता रहा । आपके मन में गोलालारीय समाज के सदस्यों के हितार्थ काफी कुछ करने की भावना थी । आपके निधन से संपूर्ण गोलालारीय समाज को अद्वितीय क्षति हुई है ।

श्रीमती रतनबाई जैन धर्मपत्नी स्व. श्री बालचंद जैन (बड़नगरवाले) का देवलोकगमन दि. 16 मार्च को भोपाल में हो गया । आप धर्मपरायण व सरल स्वभाव की महिला थी।

श्रीमती सुशीला जैन धर्मपत्नी स्व. श्री भागचंद जैन (बबीनावाले) का देवलोकगमन दि. 18 मार्च को गंजबासौदा में हो गया । आप सरल स्वभावी धर्मनिष्ठ महिला थी ।

गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि ।

प्रथम पुण्य स्मृति : श्रीमती कुसुम मानोरिया

देह त्याग -
दि. 22 जनवरी 2018
सोमवार

श्रद्धा सुमन

कुन्दनलाल जैन मानोरिया

पुत्र - श्रीमती लता राजेश जैन, श्रीमती मनीषा संजय मानोरिया

प्रपौत्र - श्रीमती सुरभि सिद्धार्थ जैन, सिद्धांत जैन, पारस, संस्कृति मानोरिया

पुत्रियां - श्रीमती पुष्पावेन कैलाशचन्द्र (अहमदाबाद)
श्रीमती स्नेहलता गणेशराम (बछौड़ा)
श्रीमती उषावेन श्रीचंद्र (अहमदाबाद)
श्रीमती किरण स्व. अनिल कुमार (भोपाल)
श्रीमती साधना अनंत स्नेही जमोरिया (नसीराबाद)

स्मृति में - कुसुम कुन्दन जैन, मानोरिया धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट की स्थापना 25 लाख रुपये से की गयी । जिसके ब्याज से धार्मिक कार्य, सामाजिक कार्य, जरुरतमंद को शिक्षा, स्वास्थ्य आजीविका में सहयोग एवं पाठशालाओं को प्रोत्साहन के लिये सहयोग किया जायेगा ।

नोट - विधिवत जानकारी प्राप्त होने पर ही शोक संदेश का सचित्र प्रकाशन किया जावेगा । वाट्सएप्प नंबर 9406744064 पर जानकारी भेजे । 1 जनवरी 2019 के पश्चात प्राप्त शोक संदेशों का विवरण ही हम प्रकाशित कर रहे है । इसके पूर्व के शोक संदेशों का शामिल करने में हम असमर्थ है ।

विशेष : ● **वर्ष 2018-19 की मेडिकल एवं इंजीनियरिंग व अन्य प्रवेश परीक्षा में उच्च रैंक प्राप्त करने वाले बच्चे अपनी जानकारी फोटो सहित भेजे।**

● कक्षा 1 से 5 तक 90 % या ए2 ग्रेड ● कक्षा 6 से 8 तक 80 % या बी1 ग्रेड ● कक्षा 8 से स्नातकोत्तर या प्रोफेशनल कोर्सेस में 70 %/ बी2 ग्रेड या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उक्त प्रारुप, अंक सूची की फोटोकॉपी के साथ **10 जून 18** तक निम्न पते पर भेंजे ताकि आगामी अंक में उन्हे उचित स्थान दिया जा सकें। प्राप्त अंक सूचीयों को वरीयतानुसार प्रकाशित करा जावेगा। उक्त प्रारुप की फोटो कॉपी भी कराई जा सकती है। **विशेष नोट** - अंक सूची पर पूर्णांक/प्राप्तांक /प्रतिशत/ओवर आल ग्रेड (फायनल ग्रेड) स्पष्ट रुप से लिखना अनिवार्य है। ● अंक सूची पर काट पीट या ओवरराइटिंग न करें। उक्त प्रारुप को पूर्ण रुप से स्पष्ट भरा होने पर ही प्रविष्टी मान्य होगी। ● वर्ष 2017-18 की अंकसूची ही स्वीकार होगी। स्नातक/ स्नाकोत्तर/ प्रोफेशनल कोर्सेस पूर्ण होने पर ही उसकी मार्कशीट की फोटोकॉपी भेंजे। ● अंकसूची की संपूर्ण फोटोकॉपी भेजे जिसमें ग्रेड निर्धारण का विवरण अनिवार्य रुप से होना चाहिए।

● **अपूर्ण जानकारी, अंकसूची नहीं होने पर, आवेदन फार्म नहीं होने पर फार्म को निरस्त कर दिया जायेगा।** फार्म भेजने का पता : **''गोलालारीय दर्शन''**,

श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 16, महारानी रोड़, इन्दौर

* 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर -3

आप हमें पर भी ईमेल कर सकते है । संपर्क सूत्र - 9424013136

वर्ष 2018-19 में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को सम्मानित करने हेतु आवेदन फार्म

वर्ष 2018-19 की परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी निम्न प्रारुप में अपना विवरण 10 जून 2019 तक **गोलालारीय दर्शन** कार्यालय पर भेज सकते है।

विद्यार्थी का नाम: ______________________ कक्षा__________

पिता/माता का नाम : ______________________

डाक का पूर्ण पता : ______________________
नगर के पिन कोड फोन सहित देवे। ______________________

सदस्यता क्रं. लिखे [| | |]

फोन/मोबाइल : ______________________

नवीन फोटो पर नाम व शहर का नाम लिखकर पिन लगाकर देवें

सदस्यता क्रमांक देखने के लिए पेपर पर चिपके आपके नाम के स्टीकर को देखें ।

कुल अंक: __________ **प्राप्तांक**__________ **प्रतिशत/ग्रेड** __________

विशेष उपलब्धि: ______________________

नोट - कक्षा 10वीं और 12वीं के विद्यार्थी अंकसूची प्राप्त न होने की दशा में इंटरनेट से प्राप्त अंकसूची की फोटोकॉपी भी भेज सकते है ।

बायोडॉटा प्रारुप का विवरण

1. क्रमांक
2. प्रत्याशी का पूरा नाम
3. स्वयं / मामा का गोत्र
4. जन्म दिनांक
5. जन्म समय (रेल्वे समयानुसार)
6. जन्म स्थान
7. शिक्षा
8. कद / वजन
9. वर्ण
10. व्यवसाय
11. वार्षिक आय
12. कुंडली मिलान
13. मंगली
14. पत्र व्यवहार का पता
15. फोन / मोबाईल नं.
16. प्रत्याशी का ईमेल

प्रत्याशी का नवीन फोटो

---

1. 001
2. अर्पित अरुणकुमार जैन
3. बिलौआ/फणीश
4. 29.01.1993
5. 02.10
6. पन्ना
7. M.Com, PGDCA
8. 5'9''/67 कि.
9. गोरा
10. व्यवसाय
11. 6 अंको में
12. नहीं
13. नहीं
14. किशोरजी के पास, टिकुरिया मोहल्ला, पन्ना (म.प्र.)
15. 9407348072, 9893658375

---

1. 002
2. विजित एस. जैन (विधुर)
3. वैद्य/प्रधान
4. 29.05.1987
5. 02.15
6. नागपुर
7. B.Com, LLB
8. 5'5''/-
9. गोरा
10. व्यवसाय - रेडीमेड
11. 20.00 लाख
12. हाँ
13. हाँ
14. जैन कलेक्शन, बैंक ऑफ इंडिया के पीछे शहीद चौक, इतवारी, नागपुर
15. 9822466141, 9422860510

---

1. 003
2. सि. नरेन्द्र विजयकुमार जैन
3. पवैया/गुड़ारे
4. 15.09.1990
5. 17.05
6. -
7. B.C.A., M.C.A.
8. 5'8'' / -
9. गोरा
10. साफ्टवेयर इंजीनियर
11. 7.20 लाख
12. -
13. -
14. सिंघई स्टूडियो, मेन मार्केट टेहरका जिला टीकमगढ़
15. 9098785726, 7389656055

---

1. 004
2. इंजी. आलोक संतोषकुमार जैन
3. बिलौआ/पटवारी
4. 27.12.1988
5. 21.05
6. लड़वारी रोड़, टीकमगढ़
7. B.E. (I.T)
8. 5'4''/55 किलो
9. गौर वर्ण
10. साफ्टवेयर इंजी, नोएडा
11. 6 अंको में
12. -
13. नहीं
14. ग्राम व पोस्ट लड़वारी जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)
15. 8700129038, 8839877088

---

1. 005
2. निखिल रविन्द्र कुमार जैन
3. जामोरिया/पंचरत्न
4. 04.07.1990
5. 19.20
6. झाँसी
7. M.Tech
8. 5'4''
9. गेहुँआ
10. साफ्टवेयर इंजी. - नोयडा
11. 6.00 वार्षिक
12. -
13. -
14. बुध बाजार के सामने राय मोहल्ला, बबीना केन्ट
15. 8115665257, 8318155937

---

1. 006
2. निशंक कैलाशचंद्र जैन
3. भंडारी/जखेरिया
4. 05.04.1986
5. 13.45
6. टीकमगढ़
7. B.A., ITI
8. 5'6'' / -
9. सांवला
10. व्यवसाय - कपड़ा
11. 2.40 लाख
12. -
13. -
14. 129, मेन रोड़, आरा मशीन, भेल झांसी
15. 9424810481, 9451937516

---

1. 007
2. सि. जितेन्द्र विजयकुमार जैन
3. पवैया/गुड़ारे
4. 1.12.1988
5. 01.15
6. -
7. Higher Secondary ITI
8. 5'11'' / -
9. गोरा
10. सिंघई वस्त्रालय एवं स्टूडियो
11. 4.20 लाख
12. -
13. -
14. सिंघई स्टूडियो, मेन मार्केट टेहरका जिला टीकमगढ़
15. 9098785726, 7389656055

---

1. 008
2. रचित (मिन्टू) सुरेशकुमार जैन
3. गुड़ारे/वैद्य
4. 06.11.1987
5. 03.10
6. -
7. बी.एस.सी.
8. 5'9''/-
9. गोरा
10. व्यापार
11. 3.00 लाख
12. हाँ
13. -
14. असाटी मोहल्ला, हटवारा स्कूल के पास छतरपुर
15. 9752358639, 8085349673

---

1. 009
2. विजीत रवीन्द्र कुमार जैन
3. सिंघई/धमसैया
4. 22.06.1988
5. 18.10
6. झांसी
7. B.B.A (Marketing)
8. 5'7''
9. गेहुँआ
11. 4.00 लाख
12. हाँ
13. आंशिक
14. बी-19, शिव गणेश कॉलोनी झाँसी
15. 9451832713, 9827739279

---

1. 010
2. प्रफुल्ल स्व. सतीशचंद्र जैन
3. पंचरत्न/-
4. 05.10.1988
5. 15.45
6. झांसी
7. B.Com
8. 5'5''
9. गोरा
10. बुटीक संचालक
11. 3.00 लाख
12. -
13. -
14. 75/ए, मस्जिद मोहल्ला सदर बाजार, झाँसी
15. 8526320050, 9451284756

---

1. 011
2. पुनीत प्रदीपकुमार जैन
3. गोट/-
4. 30.10.1991
5. 01.30
6. ललितपुर
7. B.E. (CSE)
8. 5'4'' / -
9. गेहुँआ
10. सर्विस - एड2प्रो
11. 15.00 लाख
12. -
13. -
14. ए-7, रिजेंसी ड्रीम, शिव शक्ति नगर इन्दौर
15. 9415443757, 9452986110

---

1. 012
2. मेहुल सुरेन्द्रकुमार जैन
3. भंडारी/पंचरत्न
4. 08.04.1993
5. 11.30
6. इन्दौर
7. M.B.A. studying
8. 5'6'' / 70 कि.
9. गेहुँआ
10. सर्विस- आईटीसी, भोपाल
11. 6.00 लाख
12. -
13. नहीं
14. 3/4, विजय नगर इन्दौर
15. 9522558426, 9435713139

---

1. 013
2. रवीश रवीन्द्र कुमार जैन
3. सिंघई/धमसैया
4. 23.08.1990
5. 14.37
6. झांसी
7. B.Tech (I.T.)
8. 5'8''
9. गेहुँआ
10. सर्विस-डेल इंडिया, बैंगलोर
11. 7.00 लाख
12. -
13. -
14. बी-19, शिव गणेश कालोनी झाँसी
15. 9451832713, 9827739279

---

1. 014
2. अभिषेक बालचंद जैन
3. फणीश/जाखोरिया
4. 14.04.1988
5. 23.50
6. झांसी
7. B.Com
8. 5'6''
9. गेहुँआ
10. अरिहंत इंटरप्राइजे, ट्रक ऑनर
11. 4.20 लाख
12. -
13. -
14. ग्राम पाठकपुरा, टीकमगढ़ रोड़ मऊरानीपुर, झांसी
15. 9450073445, 9795449978

---

1. 015
2. सेजल डॉ. अनिलकुमार जैन
3. दिवाकीर्ति/बिलौआ
4. 02.07.1996
5. 10.00
6. गंज बासौदा
7. B.E. (C.S.)
8. 5'5'' / -
9. गोरा
10. सर्विस - केप जेमनी, पुणे
11. 3.00 लाख
12. -
13. -
14. अनिल प्रिंटिंग प्रेस, नेहरु चौक, वार्ड नं.3 गंज बासौदा
15. 9827225647, 07594-221064

---

1. 016
2. राशि रविन्द्र जैन
3. गुणारे/पंचरत्न
4. 10.02.1992
5. 21.45
6. मऊरानीपुर
7. M.A, M.Com, ITI Fashion
8. 5'3''
9. गोरा
10. -
11. -
12. हाँ
13. -
14. अरिहंत वस्त्रालय, सेहारे मार्केट बड़ा बाजार, मऊरानीपुर (झांसी)
15. 9506696445, 9670472025

---

1. 017
2. अलका नेमीचंद जैन
3. पंचरत्न/बिलौआ
4. 09.05.1992
5. 10.30
6. उज्जैन
7. B.Com, M.Com
8. 5'/-
9. गोरा
10. -
11. -
12. -
13. -
14. 28, ए.एस-2, स्कीम नं. 78 टेम्पो स्टेंड के पास, विजय नगर, इन्दौर
15. 9753179261, 9229571434

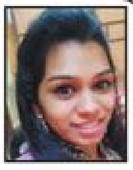

1. 018
2. दीपिका एस. जैन
3. वैद्य/प्रधान
4. 11.09.1995
5. 21.52
6. नागपुर
7. B.Com, CA (Studying)
8. 5'2''
9. गोरा
10. अध्ययनरत
11. -
12. हाँ
13. हाँ
14. जैन कलेक्शन, बैंक ऑफ इंडिया के पीछे शहीद चौक, इतवारी, नागपुर
15. 9822466141, 9422860510

---

1. 019
2. सलोनी जिनेन्द्रकुमार जैन
3. फणीश/वैद्य
4. 09.12.1993
5. 02.40
6. ललितपुर
7. M.C.A.
8. 5'2'' / -
9. -
10. -
11. -
12. -
13. -
14. 376, वसुंधरा कालोनी चांदमारी, ललितपुर
15. 9452330386, 7678877334

---

1. 020
2. अनुभा कैलाशचंद्र जैन
3. म्याने/भंडारी
4. 01.06.1994
5. 00.24
6. कोटा
7. M.Tech Hon's (Digital Comm.)
8. 5'3''/50 किलो
9. गौर
10. असिस्टेंट प्रोफेसर
11. -
12. -
13. नहीं
14. 185-बी, जय हिन्द नगर 1, बारां रोड़ कोटा
15. 9414310056, 9413115819

अल्पसंख्यक योजनाओं के लाभ से समाज को अवगत कराएं।

27 जनवरी 2014 को भारत सरकार द्वारा जैन समाज को अल्पसंख्यक के अंतर्गत घोषित करने के बाद जैन समाज को भी अल्पसंख्यक को दी जाने वाली सुविधाओं एवं लाभ प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त हो गया है। 5 साल गुजर जाने के बाद भी देश के अधिकांश क्षेत्रों में समाज को इसकी कोई जानकारी न होने से लाभ उठाने से समाज आज भी वंचित है। शासन की ओर से अल्पसंख्यक वर्ग में जैन समाज को बाकायदा एक निश्चित कोटा घोषित होता है लेकिन लाभ न लेने की स्थिति में या तो इसे अन्य अल्पसंख्यक को ट्रांसफर कर दिया जाता है या लेप्स हो जाता है। इस बारे में देश भर में जैन समाज को जागृत करने की नितांत आवश्यकता है। देश के दिगम्बर जैन समाज की कई राष्ट्रीय स्तर की संस्थाएँ हैं लेकिन किसी का भी पूरा ध्यान इसके व्यापक प्रचार प्रसार पर नहीं है। एक-दो संस्थाओं ने सीमित क्षेत्रों में शुरुआत तो की थी पर धीरे धीरे इसकी गति धीमी होती गई। इस बात पर गंभीर होकर ध्यान देने की जरुरत है। शासन की योजनाएं कागजी घोड़े वाली नहीं है बल्कि जैन समाज के हितार्थ उपयोगी वास्तविक योजनाएँ हैं। एक बार सभी संस्थाएँ एक वर्ष तक देश भर में व्यापक प्रचार प्रसार का बीड़ा उठा लें तो समाज के जरुरतमंद व्यक्तियों को कई लाभ मिल सकते है। एक वर्ष में ही इतना अधिक प्रचार प्रसार हो जावेगा जिससे यह जानकारी समाज के प्रत्येक नागरिक को अधिक से अधिक लाभ उठाने में मददगार साबित होगी।

गत 4 वर्षों में मैंने निशुल्क एवं निस्वार्थ रुप से 7 राज्यों के 56 नगरों में सेवा भावी संगठनों के आमंत्रण पर सेमिनार कर अल्पसंख्यक योजनाओं की जानकारी प्रदान की उसके परिणाम उम्मीद से कहीं बहुत ऊपर मिले हैं ऐसे कई स्थानों पर लाखों रुपये के लाभ विद्यार्थियों, व्यापारियों, महिलाओं, संस्थाओं को मिले हैं लेकिन व्यक्तिगत रुप से सेवा करने में कई असुविधाएं होती हैं अत: इस योजना को राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं को आगे आकर कुछ खास करने की जरुरत हैं। दिगम्बर जैन महासमिति, जैन सोशल ग्रुप, जैन मिलन आदि कई संस्थाएँ इसे बखूबी अंजाम दे सकती है।

एक मिनिट में बनने वाले अल्पसंख्यक स्वघोषित प्रमाण पत्र का प्रारुप बांटने हेतु शिविर से इसको प्रारंभ किया जा सकता है। मात्र 75 पैसे की एक फोटोकॉपी एक जैन विद्यार्थियों को कितना लाभ दे सकती है यह आपकी कल्पना से परे है जबकि लोग इस स्वघोषित प्रमाण पत्र के लिये देश भर में परेशान है बल्कि कुछ लोग तो भ्रमित भी कर रहे हैं। तो एक बार पुन: निवेदन एक साल, अल्पसंख्यक लाभ दिलाने के नाम। यदि किसी संस्था को लगता है कि मैं आपके कोई काम आ सकता हूँ तो नि:संकोच आप मुझसे चर्चा कर सकते हैं। - अनिल जैन बड़कुल, गुना, मो.: 7000269100

परिणयोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

सौ.कां. आयूषी का शुभ विवाह चि. हर्ष

सुपौत्री : श्रीमती कुसुम–श्री पी.सी. जैन
सुपुत्री : श्रीमती अनिता–स्व. श्री अजयकुमार जैन
नीमच (म.प्र.)

सुपौत्र : स्व. श्रीमती कमला–शाह स्व. श्री ताराचंद्र जैन
सुपुत्र : श्रीमती उमा–शाह श्री सुनील कुमार जैन (चच्चा)
विदिशा (म.प्र.)

के साथ दिनांक 29 मार्च 2019, शुक्रवार को
विनायक बैंकट हॉल, विदिशा में साआनंद संपन्न हुआ ।

विनीत – पी.सी.–कुसुम जैन, श्रीमती अनीता जैन, अखिलेश–बिन्दु, अभिलाष–प्रीति एवं समस्त फणीश परिवार

नव दाम्पत्य जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ

चि. प्रियेश का शुभ विवाह सौ.कां. राजुल

सुपौत्र : स्व. बाबूलाल जैन (टूँका वाले)
सुपुत्र : अनिल कुमार–रेखा जैन
छतरपुर (म.प्र.)

सुपौत्री : स्व. श्री धन्नालाल जैन
सुपुत्री : अरुण कुमार–सरोज जैन
सागर (म.प्र.)

के साथ दिनांक 8 फरवरी 2019, शुक्रवार को
होटल ला केपीटल, पन्ना रोड़, छतरपुर में हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ ।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स जील कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित